P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-3* November- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जयशंकर प्रसाद कृत तितली : अन्तर्वस्तु, यथार्थवादी चेतना और समकालीन संदर्भ

Jaishankar Prasad Krit Titli: Contents, Realistic Consciousness and Contemporary Context

Paper Submission: 16/11/2020, Date of Acceptance: 27/11/2020, Date of Publication: 28/11/2020

सियाराम मीणा
सह आचार्य
हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
कोटा, राजस्थान, भारत

सारांश

जयशंकर प्रसाद ने अपने उपन्यासों में कल्पना का नहीं यथार्थ दृष्टि का परिचय दिया है। इस दृष्टि से उनके उपन्यास न केवल महत्वपूर्ण हैं अपितु युगीन संदर्भों को अपने कलेवर में समेटे हुए हैं। 'उनके उपन्यासों में ग्राम, नगर, प्रकृति और जीवन का मार्मिक चित्रण हुआ है जो भावुकता और कवितत्व से पूर्ण होते हुए भी प्रौढ़ लोगों की शैल्पिक जिज्ञाषा का समाधान करता है।'[1] तितली उपन्यास में तत्कालीन ग्रामीण जनजीवन की झांकी, संघर्ष और सुधार चेतना का आदर्शोन्मुखी अंकन हुआ है। वास्तव में प्रसाद का द्वितीय उपन्यास 'तितली' ग्रामीण परिवेश से सम्बद्ध है। कंकाल के नगरों से तितली में ग्रामों की ओर आगमन है; जहां एक ओर यह उपन्यास ग्राम की सादगी, कर्मठता और मानवता की उज्ज्वल मनोभूमि स्पष्ट करता है, वहीं शोषित दीन–हीन किसानों और विकृत ग्रामीण परिवेश का सजीव चित्र अंकित करता है। प्रसाद जी के कंकाल का आधार तो यथार्थ है ही तितली भी ग्रामीण यथार्थ का जीवंत निदर्शन कराता है। उपन्यास की अंतर्वस्तु प्रेमचन्द के औपन्यासिक कलेवर के करीब ही है। उपन्यास में आदर्शोन्मुखी यथार्थ, सामाजिक चेतना, स्त्री–चेतना, कृषक जीवन की पक्षधरता, सहज अभिव्यक्ति शिल्प तथा समस्या समाधान की प्रवृत्ति महत्वपूर्ण है।

Jaishankar Prasad has introduced real vision, not imagination, in his novels. From this point of view, his novels are not only important but also contain epoch references in his collection. 'His novels have a poignant portrayal of village, city, nature and life which, while full of sentimentality and poetry, addresses the lyrical ambition of older people. Has marked the ideal In fact, Prasad's second novel Titli is related to the rural environment. From the skeletal cities the butterfly has its arrival towards the villages; While this novel reveals the simplicity, diligence and bright mood of humanity in the village, it portrays a living picture of exploited oppressed farmers and distorted rural surroundings. The basis of the skeleton of Prasad ji is not only the reality, but the butterfly also gives a live demonstration of rural reality. The content of the novel is close to Premchand's novel. In the novel, ideal-oriented reality, social consciousness, female consciousness, advocacy of agricultural life, spontaneous expression craft and problem solving are important.

मुख्य शब्द : ग्रामीण जीवन, किसान जीवन, शोषण, आदर्शोन्मुखी यथार्थवद, सुधार अभियान, स्वावलम्बन, सांस्कृतिक, संक्रमण, पलायन, सामाजिक विघटन, जाति प्रथा, प्रगतिशील चेतना, नारी चेतना,सामन्ती अत्याचार, गांधीवादी चिन्तन आदि।

Rural Life, Peasant Life, Exploitation, Ideal-Oriented Realism, Reform Campaign, Self-Reliance, Cultural, Transition, Migration, Social Disintegration, Caste System, Progressive Consciousness, Female Consciousness, Feudal Tyranny, Gandhian Thinking Etc.

प्रस्तावना

जयशंकर प्रसाद छायावाद के ही नहीं अपितु आधुनिक हिन्दी साहित्य के एक उच्चकोटि के अद्भुद प्रतिभाशाली साहित्यकार हैं जिन्होंन काव्य, नाटक और कहानी साहित्य के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित किया है। हिन्दी साहित्य में जयशंकर की विशिष्ट छवि कवि, नाटककार और कहानीकार के रूप में देखी

जाती है। आलोचकों ने भी उन्हें इसी रूप में स्थापित किया और देखा है। यही कारण है कि साहित्य के विद्यार्थी प्रसाद की उपन्यासकार की छवि का सांगोपांग अध्ययन और ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाते हैं। जबकि प्रसाद ने अपने उपन्यासों में तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व ग्रामीण–शहरी जनजीवन का यथार्थ एवं संवेदनशील साहित्यकार की दृष्टि से सफल अंकन किया है। उनके उपन्यासों में प्रेमचन्द की सी अंतर्वस्तु निहित है। उनमें जीवन का संघर्ष, समस्या और समाधान प्रस्तुत किया है। कंकाल में शहरी तो तितली में ग्रामीण जीवन का सहज कलात्मक अंकन हुआ है। उनके उपन्यासों में युगधर्म का पूर्ण निर्वाह हुआ है। अतः उनका समुचित अध्ययन व विवेचन भी होना चाहिए किन्तु जितना हो चाहिए उतना नहीं हुआ है।

अध्ययन के उद्देश्य एवं आवश्यकता

प्रस्तुत शोध पत्र इसी उद्देश्य से 'तितली' उपन्यास का अध्ययन करने का प्रयास है तथा तितली में निहित युग चेतना, आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद, स्त्री चेतना, ग्रामीण सुधार के प्रयास व विजन, समकालीन संदर्भ यथा पलायन, शहरीकरण, किसान जीवन की समस्या, शोषण, अत्याचार आदि पर शोधात्मक विवेचन प्रस्तुत शोध पत्र में किया जावेगा। प्रसाद के समूचे साहित्य में उनका औपन्यासिक कलेवर शोध रिक्तता का अनुभव कराता है। इसी आवश्यकता की पूर्ति के उद्देश्य से यह शोध पत्र प्रस्तुत है।

साहित्यावलोकन

जयशंकर प्रसाद का कृतित्व जितना कलात्मक है, उतना ही उदात्त एवं यथार्थ मानवीय संवेदन का जीवंत प्रतीक भी है। दूसरी बात यह कि उनके साहित्य में निहित मूल्यों में सार्वकालिक, सर्वाभौमिक व सार्वजनीन उपादेयता का गुण विद्यमान होने के कारण वह आलोचकों और समीक्षकों के लिए आलोचना और जिज्ञाषा का विषय रहा है। उनके साहित्य पर समीक्षात्मक पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाओं में लेख, ब्लोग आदि पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। इस दृष्टि से 'जयशंकर प्रसाद' सं. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी (अभिव्यक्ति प्रकाशन इलाहबाद 1994), हिन्दी का गद्य साहित्य–डॉ.रामचन्द्र तिवारी (विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, 1992) आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास–बच्चन सिंह, (लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद,1997) लेखों में साहित्यिक ई पत्रिका अपनी माटी सं.जितेन्द्र यादव अंक 30(अप्रैल–जून 2019) का शोध आलेख : जयशंकर प्रसाद के नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' में नारी चेतना/अनुराधा, शोध प्रबंध–जयशंकर प्रसाद के साहित्य में स्त्री–मनीषा नायक, दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय गोरखपुर– 2017(श्रोत शोध गंगा), साहित्यिक ई पत्रिका अपनी माटी मई –2013 अंक, सं.जितेन्द्र यादव आलेख–जयशंकर प्रसाद के समग्र साहित्य/राजीव आनंद, लेख 'जयशंकर प्रसाद के गद्य साहित्य में पद्य और काव्यात्मकता की छाया'– अमिता चतुर्वेदी, 12 मई 2018 (http://apnaparichay.blogspot.com/2018/02/blog-post.html) आदि कई पुस्तकें, लेख आदि प्राप्त है। जो विचार और दृष्टि प्रदान करते हैं। प्रस्तुत शोध आलेख में संदर्भ सामग्री का प्रयोग करते हुए मौलिक चिन्तन और दृष्टि–अन्वेषण का प्रयास किया गया है।

उपन्यास का कलेवर और अंतर्वस्तु

'तितली' उपन्यास समाज की जर्जर अवस्था और व्यवस्था, सामन्ती अत्याचारों से त्रस्त ग्रामीण किसान और सांस्कृतिक संक्रमण की ज्वलंत समस्याओं को दर्शाता है और साथ ही पूर्व और पश्चिम का सेतुबन्ध बनकर सामने आता है। ''यह ग्राम सुधार आन्दोलन, संयुक्त परिवार की समस्याओं तथा सामन्तवादी सामाजिक संरचना की पतनोन्मुख स्थितियों को सामने लाता है।'[2] जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों से गुजरते हुए उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द के दर्शन होते हैं, भले ही उपन्यास विधा प्रसाद की प्रिय विधा नहीं रही हो किन्तु शिल्प और संवेदना, अन्तर्वस्तु और यथार्थ चेतना में प्रसाद को पूरी सफलता मिली है।

आदर्शोन्मुख यथार्थवाद से सम्पन्न तितली उपन्यास प्रेमचन्द परम्परा का आख्यान करता है और साथ ही गांधीवादी चिंतन से युक्त दिखाई पड़ता है। उपन्यास की नायिका का नाम तितली है। नायिकपरक अभिधान से युक्त यह उपन्यास नायिका तितली के संघर्ष, हिम्मत और कर्मठता के साथ–साथ ग्रामबाला का सा सहज सारल्य और सादगी परक वर्णन करता है। तितली उपन्यास में मुख्यकथा तितली और मधुबन की है। प्रासंगिक कथायें इन्द्रदेव शीला राजकुमारी मलिया चौबे इत्यादि ने उपन्यास की कथा में उलझाव पैदा कर उसके अन्त तक पहुंचाया है। इन्द्रदेव और शैला की कथा मुख्यकथा से इतनी जुड़ी हुई प्रतीत होती है और अन्त तक साथ चलती है इसलिए प्रतीत ऐसा होता है कि तितली के साथ इनकी भी कथा मुख्य कथा है।

तितली उपन्यास की कथा चार खण्डो में बंटी है, प्रत्येक खण्ड में सात, दस, आठ और अन्तिम खण्ड में पांच अंक है। कथा धामपुर गांव से आरंभ होती है, कथा का ताना बाना नायिका तितली के इर्द–गिर्द ही बुना गया है। तितली रामनाथ की पालिता पुत्री है और मधुवन रामनाथ का शिष्य है। शिकार के प्रसंग में जमींदार इन्द्रदेव उनकी मित्र शैला और चौबे से इनका परिचय होता है। शैला की तेजस्विता से तितली प्रभावित होती है। शैला और तितली की कथा उपन्यास में साथ–साथ चलती है इसलिए शैला और इन्द्रदेव की प्रासंगिक कथा मुख्य कथा की छाया ही जान पड़ती है।

लन्दन में बेरिस्टरी की शिक्षा प्राप्त करते समय इन्द्रदेव और शैला की दोस्ती हो गई थी। असहाय शैला को इन्द्रदेव ने सहारा दिया था। शैला भी इन्द्रदेव की बहुत सेवा की थी, भारत देखने की इच्छा से यह इन्द्रदेव से साथ आई है। चिकित्सा के सिलसिले में अनवरी इन्द्रदेव की मां श्याम दुलारी और बहन माधुरी से मिलती है, अत्यधिक घनिष्ठता बढ़ाकर घर में अनधिकार प्रवेश कर जाती है। चौबे, माधुरी और अनवरी अपनी कूट योजना के तहत शैला को बड़ी कोठी से छोटी कोठी में भेज देती है।

रामनाथ की कथा द्वारा पता चलता है कि तितली बनजरिया के देवनन्दन की पुत्री है। शैला को भी अपनी मां जैन के भारत के साथ संबंध का पता चलता

है। मधुवन की आर्थिक परेशानी पर शैला उसकी सहायता करती है। तितली और मधुवन में सहज प्रेम है। शेरकोट के मालिक मधुवन को उसकी विधवा बहन राजकुमारी ने पाला है। किन्तु अब शेरकोटे पर श्यामदुलारी का हक है। बनजरिया पर भी तहसीलदार की आंख लगी है। इस प्रकार पात्रों का सामान्य परिचय इस खण्ड में हुआ है, साथ ही भावी द्वन्द्व के लिए इस खण्ड में पक्ष प्रतिपक्ष तैयार होते हैं।

द्वितीय खण्ड इस उपन्यास का महत्वपूर्ण खण्ड है संघर्ष की ओर कदम बढ़ाता उपन्यास भारतीय संस्कृति को उज्ज्वल पक्ष को प्रकट करता है। शैला को नीलकोठी से अपने संबंध पता का चलता है। तहसीलदार शेरकोट को बैंक बनाने के लिए श्यामदुलारी से हस्ताक्षर करवा लेते हैं, लेकिन शैला नीलकोठी में बैंक, अस्पताल इत्यादि खोलने की योजना बनाती है, जिसे इन्द्रदेव भी स्वीकार कर लेते हैं। गांव के विकास की योजना का सुंदर रूप इस उपन्यास का महत्वपूर्ण तथ्य है।

रामनाथ तितली और मधुवन के विवाह का प्रस्ताव राजकुमारी के सामने रखते हैं लेकिन चौबे के बहकावे में आकर राजकुमारी इसके लिए इन्कार कर देती है परंतु रामनाथ दोनों का विवाह करवा देते हैं। भारतीय संस्कृति के प्रति समर्पित हो शैला हिन्दू धर्म स्वीकार कर लेती है और वह दीक्षा ग्रहण करती है। नौकर रामदीन की प्रासंगिक छोटी सी कथा भी यहां आई है। शैला के प्रति जमींदार परिवार के व्यवहार से दुःखी हो उपद्रवी हो जाता है। शैला इन्द्रदेव के विवाह प्रस्ताव को अस्वीकार कर देती है। माधुरी के पति श्यामलाल द्वारा नौकरानी मलिया का अपमान देखकर कुछ न कर पाने की असमर्थता के कारण ग्लानियुक्त हो इन्द्रदेव गांव से प्रस्थान कर देते हैं। शैला नीलकोठी में अस्पताल और बैंक खोलने में सफल होती है। यहां लेखक की प्रगतिशील चेतना की अभिव्यक्ति हुई है।

तृतीय खण्ड में घटनायें तेजी से घटती है और संघर्ष अत्यधिक बढ़ जाता है। इस खण्ड में उपन्यास नायिका का साहसी और स्वावलम्बी रूप उभरकर आया है। मलिया को जमींदार के घर नौकरी न करने के कारण धमकाया जाता है लेकिन तितली उसे सम्बल प्रदान करती है। मधुवन श्यामलाल के पहलवान को हरा देता है। पाला पड़ने के कारण किसानों की मेहनत पर पानी फिर जाता है। माधुरी श्यामलाल और अनवरी की चरित्रहीनता से व्यथित हो अपनी व्यथा कथा शैला से कहती है। श्याम दुलाई माधुरी के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए सारी सम्पत्ति माधुरी के नाम करने की बात कहती है, शैला इसका समर्थन करती है इसके लिए वह स्वयं उनके साथ बनारस जाती है।

एक विवाह में राजकुमारी और तितली का सामना होता है, राजकुमारी तितली से मुहं फेर लेती है। विवाह में हाथी बिगड़ जाता है। हाथी से वेश्या मैना को बचाकर मधुवन शेरकोट लाता है किन्तु शेरकोट के दरवाजे पर चौबे को देखकर वह सन्देह ग्रस्त हो जाता है और चौबे की पिटाई कर देता है। खेत के प्रश्न पर रामजस पुनः चौबे को पीट देता है। इस संघर्ष के फलस्वरूप दोनों पक्षों में लड़ाई होती है मधुवन भी इस लड़ाई में शामिल होता है। इस कारण दोषी मानकर उस पर मुकदमा चलाया जाता है। पैसे की आवश्यकता के कारण राजकुमारी महन्त के पास जाती है। महन्त के दुराचरण पर मधुवन उसका गला दबाकर रुपयों की थैली लेकर भाग जाता है और वेश्या मैना के घर पहुंचता है। मैना उसकी थैली रखकर उसे चुनार भेज देती है। चुनार से मधुवन और रामदीन दोनों कोलकाता आते हैं। तितली मधुवन के मुकदमों के सिलसिले में अनायास ही शैला और इन्द्रदेव के पास पहुंच जाती है। शैला और इन्द्रदेव का विवाह हो जाता है। तितली अपने स्वाभिमान के कारण बिना मदद लिये ही चली जाती है और हिम्मत से आने वाली परिस्थितियों का सामना करने का निश्चय करती है। यहां नारी के भव्य रूप को लेखक ने उभारा है।

अन्तिम खण्ड समाधान परक है। तितली का व्यक्तित्व विशद् रूप में प्रतिभासित होता है। तितली पाठशाला चलाती है। शैला ने बाटसन के साथ ग्राम सुधार अभियान में और तेजी लाती है। श्याम दुलारी शैला को पुत्र वधु के रूप में स्वीकार कर आशीर्वाद देती है। लन्दन से शैला के पिता आ जाते हैं, सरल ह्रद्या शैला अपने पिता को स्वीकार कर लेती है।

इधर मधुवन कोलकाता में रिक्शा चलाता है, एक दिन श्यामलाल और मैना को देखता है तो दबा आक्रोश प्रकट हो जाता है। पुलिस उसे पकड़ लेती है। मैना के झूठे बयान के कारण मधुवन को दस वर्ष के कारावास की सजा मिलती है। इधर तितली सभी परिस्थितियों का सामना हिम्मत से करती है और मधुवन को अच्छे व्यवहार के कारण दो वर्ष में ही छोड़ दिया जाता है। जेल से बाहर अपने साथी के साथ एक मेले में जाता है वहां महन्त, मैना, चौबे और तहसीलदार को अपनी करनी की सजा अपने आप ही मिल जाती है, क्योंकि मेले में हाथी बिगड़ जाता है और उन चारों की मृत्यु हो जाती है, यहीं उसे अपने और तितली के पुत्र मोहन के बारे में जानता है। वह बनजारिया लौटता है निराश तितली को खुशी से आश्यर्च चकित कर देता है ''एक चिर परिचित मूर्ति, जीवन युद्ध से थका हुआ सैनिक मधुवन विश्रम शिविर के द्वार पर खड़ा था।''3

आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी चेतना व समकालीन संदर्भ

प्रसाद के इस उपन्यास में एक ही साथ सहज रूप से आज के कई विमर्श और समस्याएं जिसे देश और समाज जूझ रहा है– दिखाई देते हैं। स्त्री चेतना, अधिकार, शापित ग्रामीण जीवन, शोषित किसान जीवन, आर्थिक संकटपूर्ण जीवन, सांस्कृतिक चिन्तन, शहरीकरण, पलायन आदि। कहना न होगा कि तितली उपन्यास मात्र ग्रामीण परिवेश को ही नहीं दर्शाता अपितु नारी के साहसी और स्वावलम्बी रूप को भी निदर्शित करता है। किसान जीवन की विडम्बनाओं और उन पर होते अत्याचारों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करता है। इसमें समस्याओं का सतही वर्णन मात्र नहीं है अपितु सार्थक समाधान भी है। सम्पूर्ण कथा चक्र तितली जो उपन्यास की नायिका है उसके इर्द–गिर्द घूमता है इस कारण उपन्यास की कथा में पारस्परिक समबद्धता का गुण विद्यमान है। प्रत्येक घटना कथा धारा का विकास करती हुई उद्देश्य को प्राप्त करने में सहायक हुई है। किसान हमारी सभ्यता और

संस्कृति का ऐसा भूखा देवता है जो सबको खाने को देता है, पर उसकी समस्याएं और शोषण अंतहीन है। आज भी वह आत्महत्या करने को विवश है। किसान आत्महत्या के आकड़े देश में दिल दहला देने वाले हैं। प्रकृति की मार भी किसान को ही मारती है। किसान आत्महत्या के बारे में प्रो.संजय नवले ने लिखा है कि ''भले भारतवर्ष में किसानों की आत्महत्याएँ कोई नयी बात न हो, परन्तु फिर भी जब भूमण्डलीकरण के दौर के बाद जिस तादाद में वह बढ़ती गयी, सारी दुनिया का ध्यान इस सामाजिक समस्या की ओर जाना स्वाभाविक था। राष्ट्रीय अपराध पंजीकरण संस्थान द्वारा सन् 2014 में यह संख्या 5,650 दर्ज की गयी।'[4] प्रसाद द्वारा तितली में उठायी किसानों की समस्या इस बात का प्रमाण है कि किसान हर व्यवस्था और समय में ठगा गया है। उसका विकास आवश्यक है पर फिर भी यह सिर्फ कल्पना ही होगी, जिस पर किसी का ध्यान नहीं हैं। तितली उपन्यास में प्रसाद ने समाज के आंतरिक विकृत यथार्थ को बड़ी कलात्मकता के साथ प्रस्तुत किया है। इसमें बड़े–बड़े तसल्लुकेदारों के खोखले संस्कारों, विलासिता का यथार्थ चित्रण है वहीं ग्राम जीवन की विवश मानवता का मार्मिक चित्रण किया है। डॉ. रामचन्द्र तिवारी लिखते हैं कि एक ओर तितली बड़े–बड़े तालुकेदारों के घरों का आन्तरिक दर्शन कराती है, वहीं प्राचीन खोखले संस्कार पलते हैं, जहां आर्थिक लाभ के लिए अन्तर्विद्रोह की ज्वाला धधकती है और जहां विलासिता भीतर ही भीतर रंग लाया करती है। दूसरी ओर वह प्रकृति की स्वच्छंद गोद में साँस लेती हुई विवश मानवता का चित्र भी उपस्थित करती है।'[5]

यह कृति अपने आप में पूर्णतः मौलिक है। नवीन प्रगतिशील भावनाओं को दर्शाती यह कृति विकसित ग्राम और स्वावलम्बी नारी के अभिनव भव्य रूप को भी निदर्शित कराती है। कथा का आधार, रूप और परिवेशगत संवेदना अपने आप में अलग और पूर्णतः मौलिकता से ओत–प्रोत है। उपन्यास ग्रामीण यथार्थ की भूमि पर खड़ा है। इसमें लेखक ने भविष्य की बढ़ती जिनसे प्रवृत्ति और समस्या को उपन्यास में इंगित किया है, वह है–ग्रामीणों का शहरों की ओर पलायन। ग्रामीण जन जीवन की खस्ता हालत उन्हें शहर की ओर धकेलती जा रही है और शहर में हाड़ तोड़ मेहनत करके भी वह झुग्गी–झोपड़ी में गुजारा करता है, महनत–मजदूरी, रिक्सा चलाकर काम चलाता है। डॉ.विकास कुमार हिंसा लिखते हैं कि अशिक्षा, गरीबी व बेरोजगारी ये तीन प्रमुख कारण हैं जो पलायन का कारण बनते हैं। गांवों में न शिक्षा का माहौल है और न ही रोजगार का कोई साधन। इस कारण निर्धनता के कारण लोग पलायन को विवश हो जाते हैं। ग्रामीणों को आशा रहती है कि उन्हें महानगरों में जीवन की सभी सुविधाएं मुहैया हो पाएंगी। महानगरों का दिवास्वप्न ही उन्हें गांवों से शहरों की ओर भटकाता है।'[6] तितली उपन्यास इस समस्या को उठाता है। ग्रामीण जीवन की विडंबना और पलायन के कारण कई तरह के सामाजिक और आर्थिक संकट समाज में बढ़ रहे हैं। ''वर्ष 1921 में ग्रामीण जनसंख्या 88.8 प्रतिशत थी जो घटकर 2011 में 68.84 प्रतिशत रह गई है। आज हमारे गांवों से शहरों की तरफ निरंतर पलायन हो रहा है जिससे ग्रामीण क्षेत्रों की जनसंख्या का प्रतिशत घट रहा है और शहरी क्षेत्रों की जनसंख्या में लगातार वृद्धि होती जा रही है।'[7] जिसके कारण कई सामाजिक और आर्थिक विकृतियां समाज में बढ़ रही है। सांस्कृतिक संक्रमण, ग्रामीणों का शहरों की ओर पलायन, किसानों का त्रासदी पूर्ण जीवन पिछड़ापन इत्यादि तत्कालीन समसामयिक परिस्थितियों के यथार्थ वर्णन ने उपन्यास को घटनात्मक सत्य से संबंधित किया है तथा प्रेमचन्द की औन्यासिक चेतना के करीब ला खड़ा किया है।

कलात्मक वैभव से सम्पन्न परन्तु साथ ही एक रौचकता और अन्तहीन जिज्ञासा की सुंदर सृष्टि इस उपन्यास में हुई है। सत्य को रोचक ढंग से प्रस्तुत करना उपन्यास कला का महत्वपूर्ण आधार है। तितली की रौचकता अथ से इति तक बहुत ही प्रशंसनीय है। अन्त में भी नायिका तितली का हताश होना और मधुवन का उसी समय आना यहां प्रसाद की जिज्ञासा सृष्टि और नाटकीयता का आभास भी मिलता है। इस प्रकार कृतिकार ने मौलिक जीवनगत सच्चाइयों को कथासूत्र में पिरोया है।

''तितली प्रसाद की व्यापक संवेदनशील एवं गंभीर जागरूकता की प्रतीक कलाकृति है, इसके सृजन ने उनकी बहुमुखी प्रतिभा के आयाम विस्तृत कर किये हैं।'[8] प्रसाद की यह कृति वास्तव में एक नवीन सामाजिक चेतना से युक्त हो जर्जर सामाजिक अवस्था और जातीयता, पारिवारिक विघटन, बिखरे जीवन सूत्रों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करती है। टूटती संयुक्त परिवार प्रथा की सामाजिक स्थिति को इस उपन्यास ने वाणी दी है। ''भारतीय सम्मिलित कुटुम्ब की योजना की कड़िया चूर–चूर हो रही है वह आर्थिक संगठन अब नहीं रहा, जिसमें कुल का एक प्रमुख सब के मस्तिष्क का संचालन करता हुआ रूचि की समता का भार ठीक रखता था।'[9] आज के भारतीय समाज से यह भव्य पारिवारिक व्यवस्था लुप्त होती जा रही है। इस वेदना से लेखक व्यथित है। प्रसाद ने इस उपन्यास में पूर्व और पश्चिम के सौन्दर्य का समन्वय किया है अर्थात् शैला जो पश्चिमी संस्कारों में पली एक विदेशी युवती है उसका इन्द्रदेव से विवाह और विवाह को श्याम दुलारी और समाज की स्वीकृति भारतीय सांस्कृतिक औदात्य को प्रकट करती है। जातीयता के बन्धनों को ढ़ीला करने का सफल प्रयास इस उपन्यास में किया गया है। उपन्यास के प्रगतिशील विचारों वाले पात्र रामनाथ कहते हैं कि ''मैं मानता हूं पश्चिम एक शरीर तैयार कर रहा है, किन्तु उसमें प्राण देना पूर्व के आध्यात्मवादियों का काम है। यहीं पूर्व और पश्चिम का वास्तविक संगम होगा, जिससे मानवता का स्रोत प्रसन्नधार में बहा करेगा।''[10] यह उदार दृष्टिकोण भारतीय संस्कृति की पहचान है और यहां लेखक की उदार मानवतावादी दृष्टि का परिचय मिलता है।

तितली उपन्यास ग्रामीण भाव भूमि पर पल्लवित हुआ है अतः इसमें ग्रामगत समस्याओं का यथा तथ्य चित्रण हुआ है। तहसीलदार, महन्त, पटवारी इत्यादि सामन्तवाद के पोषक और प्रतीक किसानों का हर तरह से शोषण करते हैं, और वहीं प्राकृतिक प्रकोपों से भी किसानों को जूझना पड़ता है। ''उसकी प्रसन्नता व सालभर की

आशाओं पर वज्र की तरह पाला पड़ गया।''[11] दीनहीन शोषित किसानों की कमर तोड़ने के लिए शोषक वर्ग और प्राकृतिक प्रकोप काफी हैं। मधुवन तो ग्रामीणों पर होते अत्याचार का जीता जागता नमूना है। विभिन्न साजिशों और विपरीत परिस्थितियों के तहत वह जेल में पहुंच जाता है। इस उपन्यास में सांस्कृतिक संक्रमण, गांवों से शहरों की ओर ग्रामीणों के पलायन की समस्या को भी उठाया है। ''उखड़ते हुए गांव और बढ़ते हुए नगर का विराट भारतीय तथ्य तितली में भी चित्रित हुआ है।[12]

''नारी के प्रति संवेदन आधुनिक हिन्दी साहित्य का सर्वोपरि वैशिष्ट्य है।[13] वास्तव में प्रसाद के सम्पूर्ण साहित्य में स्त्री को जो महत्व प्राप्त हुआ है, वह पूर्व के अपेक्षा अधिक गौरवशाली,'[14] सामाजिक, प्रगतिशील और सामयिक है। प्रसाद की सभी कृतियों में यह नारी संवेदन मुखर हो उठा है। तितली में नायिका तितली नारी चेतना की साकार प्रतिमा परिलक्षित होती है। शैला जो स्वावलम्बन को प्रथम महत्व देती है उसमें नारियोचित सहजता के साथ–साथ अपने अधिकारों के प्रति सजगता प्रसाद प्रत्येक नारी में देखना चाहते हैं। तितली जो आरंभ से सीधी व सरल है। वह परिस्थितियों के कारण अपनी कर्मठता और हिम्मत से सभी संघर्षों को जीतती भी है। यहां लेखक का प्रगतिशील नारी दृष्टिकोण परिलक्षित होता है। वहीं विधवा राजकुमारी और परित्यक्ता माधुरी विविध विडम्बनाओं से ग्रसित नारी हृदय के हाहाकार की प्रत्यक्ष प्रतिमायें हैं। दृढ़ संकल्प युक्त तितली कहती है कि ''मुझे तो उनके लौटने के दिन तक जीना पड़ेगा और वे जो कुछ छोड़ गये हैं उसे सम्हाल कर उनके सामने रख देना होगा''[15] मधुवन से बिछड़ी तितली की यह प्रशान्त दृढ़ता प्रसाद प्रत्येक नारी में देखना चाहते हैं। ''तो क्या स्त्रियां अपने लिए कुछ भी नहीं कर सकती? उन्हें अपने लिए सोचने का अधिकार भी नहीं''[16] यह प्रश्न वास्तव में सम्पूर्ण नारी समाज का है जो कहीं न कहीं पुरूष प्रधान समाज की मनोवृत्ति को दर्शाती है। इस प्रकार प्रसाद के उपन्यास में नारी संवेदन का सत्य चित्र मुखरित हुआ है। इस प्रकार तितली उपन्यास ग्रामीण जीवन का समग्र विवेचन करता है। सामन्ती अत्याचारों और सामाजिक आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा हुए ग्रामीण समाज को दर्शाता है। उपन्यास में ग्राम सुधार अभियान की तितली की योजना वास्तव में प्रशंसनीय है। यह कृति आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कृति है। समस्याओं का यथार्थ, चिन्तन और आदर्श परक समाधान इस कृति में परिलक्षित होता है।

हालांकि ग्राम सुधार की तीव्रता और ग्रामीणों द्वारा अंग्रेज स्त्री शैला को इतनी जल्दी स्वीकार लेना कहीं–कहीं अस्वाभाविक सा प्रतीत होता है। गांवों में सुधार इतना सहज और जल्द आम तौर पर नहीं हो पाता है। यह इस उपन्यास की कमी है। इसमें प्रसाद का अधिक दोष भी नहीं है क्योंकि प्रसाद नगरीय पृष्ठभूमि से सम्बद्ध थे अतः ऐसी अस्वाभाविकता आना आश्यर्च की बात नहीं है।

किन्तु यदि देखा जाय तो तितली का सामाजिक चिन्तन बहुत उत्कृष्ट प्रतीत होता है। प्रसाद का चिन्तन मौलिक है। ग्राम में सुधार की योजना का क्रियान्वयन, असहाय तितली का अपने आप में शक्ति एकत्रीकरण प्रसाद की आदर्शवादिता का परिचायक है।

''प्रसाद और प्रेमचन्द के समाज में मूलतः कोई अन्तर नहीं, किन्तु प्रेमचन्द ने उसकी ऊपरी सतह का विवेचन अधिक किया है और प्रसाद ने अन्तरामक को स्र्श करने की चेष्टा की है''[17] वास्तव में प्रसाद ने विकृत समाज की अन्तरात्मा को समझ कर उसका समाधान करने की चेष्टा की है। प्रसाद ने समाज व्यवस्था का वर्णन स्वतंत्र मानवीय दृष्टिकोण से किया है। प्रेमचन्द्र ने समाज व्यवस्था का वर्णन स्वतंत्र मानवीय दृष्टिकोण से किया है। प्रेमचन्द ने समाज व्यवस्था को पृथक रूप से उभारा है। स्वतंत्र मानवतावादी उदार दृष्टि के कारण जो सामाजिक जीवन तितली में प्रकट हुआ है वह समाज के छोटे–छोटे दुर्बल पक्षों पर प्रहार करता है, साथ ही समाधान भी प्रस्तुत करता है। उपन्यास में आये 'विधवा जीवन, अवैध प्रेम, वेश्या–वृत्ति, धर्मान्धता तथा सरकारी कर्मचारी की निरंकुशता[18] आदि अनेक समस्याएं भले ही शिल्प की दृष्टि से प्रासंगिक कथा का भाग हों लेकिन उपन्यास के संवेदनात्मक धरातल को न केवल गहराते हैं अपितु विस्तार और स्वाभाविकता भी प्रदान करते हैं। उपन्यास में आदर्श और यथार्थ का स्वरूप प्रसाद की सामाजिक चेतना व आकांक्षा का स्वाभाविक प्रतिफलन हैं। उसमें कहीं अस्वाभाविकता और अविश्वसनियता नहीं हैं। चन्द्रकांत वांदिवडेकर लिखते हैं कि शैला का ग्राम संगठन 'कंकाल' के भारत संघ की अपेक्षा अधिक सक्रिय और अधिक व्यवहारिक है और व्यंग्य का स्वर तिरोहित है। मधुबन की अपनी कठोर नियति की क्रीड़ा के सामने अपने स्वत्व को बचाये रखना और तितली का तिलतिल जलते हुए चौदह वर्षों तक सक्रिय सतित्व का रूप उपन्यास को आदर्श का कलात्मक संस्पर्श देता है। यह कलात्मक इसलिए कि कहीं भी अविश्वसनीयता और आकस्मिकता का, अद्भूदता और विलक्षणता का यहाँ हस्तक्षेप नहीं होता। यथार्थ न इतना जुगुप्सामय कि ऐसा लगे कि उसके घटक सायास चुन–चुनकर इकट्ठा किए गये हैं और आदर्श न इस तरह आरोपित कि कृत्रिम और हवाई नाटकीयता उत्पन्न हो।'[19]

निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते हैं तितली उपन्यास प्रेमचन्द परम्परा से प्रभावित होते हुए भी एक नवीन दृष्टिकोण से ओत–प्रोत है। इस उपन्यास में उन समस्याओं को उठाया है जो आज भी भारतीय समाज में और विकृत रूप में बरकरार है। सामाजिक विघटन, जाति प्रथा, शोषित आर्थिक व्यवस्था, अनैतिकता और नारी संवेदन का स्वर उनके इस उपन्यास में मुखरित हुआ है और इनका समाधान करने की चेष्टा भी की गई है। उपन्यास में प्रसाद का सुधारवादी दृष्टिकोण उनकी प्रबल सामाजिक आंकांक्षा का प्रतीक है। यह उपन्यास हिन्दी उपन्यास धारा को एक अभिनव दृष्टि प्रदान करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *http://www.hindisarkariresult.com/jaishankar-prasad/ 16 फरवरी 2020*
2. *विजय मोहन सिंह : आधुनिक उपन्यासों में प्रेम की परिकल्पना,रचना प्रकाशन, इलाहाबाद,1972, पृष्ठ 172*

3. *जयशंकर प्रसादः तितली पृष्ठ 270*
4. *सं. प्रो संजय नवले : उपन्यासकार संजीव किसान–आत्महत्या : यथार्थ और विकल्प ('फाँस' उपन्यास का सन्दर्भ), वाणी प्रकाशन दरिगंज नई दिल्ली, प्र.सं. 2018, (भूमिका से)*
5. *डॉ.रामचन्द्र तिवारी : हिन्दी का गद्य साहित्य , विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी तृ.सं. 1992,पृ.सं.416*
6. *कुरूक्षेत्र अंक 11, सितंबर 2014, पृ.सं.22, रोजगार नहीं होना पलायन का मुख्य कारण– विकास कुमार सिन्हा*
7. *कुरूक्षेत्र : सितंबर, 2014, ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन : कारण एवं परिणाम– डॉ. अर्जुन सोलंकी, पृ.17*
8. *रामप्रसाद मिश्र : प्रसाद और उनके ग्रन्थ,विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, 1986 पृष्ठ 129*
9. *जयशंकर प्रसाद : तितली पृष्ठ 109*
10. *जयशंकर प्रसाद : तितली पृष्ठ 129*
11. *जयशंकर प्रसाद : तितली पृष्ठ 142*
12. *रामप्रसाद मिश्र – प्रसाद और उसके प्रमुख ग्रन्थ,विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, 1986 पृष्ठ 127*
13. *रामप्रसाद मिश्र – प्रसाद और उसके प्रमुख ग्रन्थ,विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, 1986 पृष्ठ 111*
14. *शोध सृजन, डॉ.बलजीत कुमार श्री वास्तववर्ष9, अंक 1,–जून, 2017 प्र.1, सम्पादक*
15. *जयशंकर प्रसाद : तितली पृष्ठ 213*
16. *जयशंकर प्रसाद : तितली पृष्ठ 36*
17. *इन्द्रनाथ मदान – प्रसाद प्रतिभा,नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1971 पृष्ठ 200*
18. *डॉ.रामचन्द्र तिवारी : हिन्दी का गद्य साहित्य , विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी तृ.सं. 1992,पृ.सं417*
19. *सं. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी : जयशंकर प्रसाद– लेखक चन्द्रकांत वांदिवडेकर–जयशंकर प्रसाद और कथा साहित्य में स्वच्छंदतावादी यथार्थवाद, पृ.सं. 230 प्र.सं.1994*